बकरी पालन एक उत्तम व्यवसाय

»डॉ. पी. मूवेंथन »डॉ. रेवेन्द्र कुमार साहू »दिलीप कुमार पाटले

आईसीएआर-नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बायोटिकस्ट्रेस मैनेजमेंट(ICAR- NIBSM), बरोंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़

बकरी पालन व्यवसाय छोटे कृषकों व बेरोजगार युवाओं के लिए आय का एक अच्छा स्त्रोत है जो कम पूंजी पर शुरू किया जा सकता है। हमार।देश में बकरी को गरीबों की गाय के नाम से भी जाना जाता है। बकरी पालन व्यवसाय आर्थिक और समाजिक दृष्टिकोण से भूमिहीन मजदूर, लघु व सीमांत कृषक अपने परिवार के पोषण तथा अन्य आवश्कताओं की पूर्ति के लिए पहले से करते आ रहे हैं। बकरी बहुत उपयोगी और सीधी-साधी होती है हर तरह की जलवायु में ढल जाती है। छोटे कद होने की वजह से इनकी देखभाल करना आसान होता है। यह व्यवसाय का एक अच्छा स्त्रोत है बकरी से हमें दूध, मांस, खाल, ऊन और गोबर (मिगनियों) खाद प्राप्त होता है। बकरियों से उत्पन्न मेमनों को बढ़ाकर व बकरों को प्रजनन योग्य तैयार कर अच्छे दामों में बेचकर आय अर्जीत की जा सकती है। भारत में बकरियों की संख्या 13,51,07 लाख हैजिसमें से अधिकांश (95.5 प्रतिशत) ग्रामीण क्षेत्रों में से है। 4.5 प्रतिशत बाहरी क्षेत्रों में है। बकरी का दूध और मांस भारत में 3 प्रतिशत (46.7 लाख टन) और 13 प्रतिशत (9.4 लाख टन) पशुधन में योगदान है।

उत्तम किस्मों के नस्लों का चुनाव

- बकरी का चयन सावधानी पूर्वक करे, हमारी चयन ही हमारे व्यवसाय पर प्रभाव डालता है।
- नर देखने में स्वस्थ, चुस्त व फुर्तीला हो।
- प्रजनन योग्य बकरों की बनावट व रंग, नस्ल के अनुरुप हो, शरीर का भार अधिक हो, सींग पूरी तरह ऊपर में हो, शरीर पर छोट`बाल चमकदार हो।

सिरोही नस्ल

- शरीर हष्ट-पुष्ट गहरीला मध्यम आकार का होती है। कान चपटे हुए नीचे की ओर लटके हुए लम्बी पत्तेनुमा आकार की होती है।
- सिरोही मांस व दूध के लिए अच्छी मानी जाती है।
- एक ही बार में 2 बच्चों को जन्म देती है।
- शरीर पर गहरे/ हल्के भूरे रंग की धब्बे पायी जाती है।
- पूँछ छोटी सी ऊपर की ओर उठी हुई होती है।
- गले के नीचे अंगुली के समान 2 गुल्टे (मासल भाग)।
- यह नस्ल मुख्य रूप से अरावली पर्वत राजस्थान के क्षेत्रों में (नागौर, टौक, राजसमंद, उदयपुर, सिरोही व अजमेर) पायी जाती है।
- मुंह के जबड़े के नीचे की ओर दाढ़ीनुमा बाल।
- दूध उत्पादन 75 किलोग्राम, अवधि 115 दिनों तक देती है।
- नर बकरों का वजन 40-50 किलो तक और मादा का 23-27 किलो होती है।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा बकरी वितरण

कृषि विज्ञान केन्द्र, कटघोरा कोरबा एवं राजनांदगाव में राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान, बरोंडा, रायपुर द्वारा डी.बी.टीबायोटेक-किसान परियोजना का संचालन किया जा रहा है। डी.बी.टीबायोटेक किसान परियोजना के अंतर्गत कृषि विज्ञान केन्द्र के कृषि वैज्ञानिको द्वारा चयनित पांच गांव के 05 कृषको को 10:1 के अनुपात में 10 मादा बकरी व 01 नर बकरा उन्नत नस्ल-सिरोही का वितरण किया गया।

आहार व्यवस्था

- आहार का महत्व पशु के वृद्धि विकास के साथ-साथ दूध, मांस की उत्पादन पर असर डालती है इसलिए हमेशा अच्छी गुणवत्ता वाली पौष्टिक आहार दे, आहार में हरा व सूखा चारा का मिश्रण हो।
- रेशेदार चारे जो वनस्पति पर्यावरण में आसानी से मिल जाते हैं जैसे कि बबूल, नीम, अरंड, बेर, गुलर, जंगली जलेबी, जामुन व खेजड़ी जिसे बकरी आसानी से खाकर पचा लेती है।
- यदि हमारे पास जमीन और पानी की सुविधा हो तो हरा चारा के रूप में मक्का, बरसीम, जौ, रिजका, गेहूँ आदि फसल ले, जिससे पशुचारा के साथ-साथ आपके दूसरी फसल से प्राप्त दाना को बेचकर अतिरिक्त आय भी कमाया जा सके। जिससे खेती की लागत में भी कमी की जा सकती है।
- आहार में शुष्क पदार्थों के साथ दाना का मिश्रण दे जिससे उत्पादन क्षमता और शारीरिक वृद्धि अच्छी होती है। बकरियां 3-3.5 प्रतिशत तक अपने शरीर, भार के अनुसार शुष्क पदार्थ

खाकर पचा लेती है।

- सूखा चारा घर पर तैयार कर रखे- 1 किलो नमक, मकई का दाना 1 किलोग्राम चने का छिलका 15 किलो, गेहूँ का चोकर 40 किलो, मूंगफली की खली।

आहार दाना मिश्रण अवयव के साथ प्रतिशत	
दानाअवयव	प्रतिशत
साधारण नमक	0.5
गेहूं का चोकर	20
जौ/मक्का	15
खनिजलवण	2.5
मूंगफली की खली	25

आवास का निर्माण

निम्न सावधानियों के आधार पर निर्माण तैयार करे आवास हमेशा ऊँचे स्थान और समतल जगह पर हो, दिशा उत्तर-दक्षिण उपयुक्त माना जाता है, ताकि सूर्य की सीधे किरणे आ सके। अर्द्ध खुले बाड़े अच्छी होती है, क्योंकि कुछ स्थान खुली होती है, बाकी स्थान घास-फूस से ढ़की होती है। पशु अपने आप को वातावरण के अनुरूप प्रतिकूल मौसम में बचाव कर सकता है। 1-1.5 वर्ग मीटर प्रति व्यस्क बकरी के अनुसार प्राप्त होती है। 10 फीट *9 इंच पानी टंकी (खेली) का आकार को जिससे बकरियों को पानी पीने में सहायक हो।

गर्भावस्था व प्रसवकाल के समय बकरी की देखभाल

- बकरियों में गर्भकाल 5 माह (143-148 दिन) होता है।
- स्वस्थ मेमने (बच्चे) हो उसके लिए मां की बियाने की 5-6 सप्ताह पहले खान-पान पर ध्यान दे
- बकरी से प्रसव होने के पहले पशु चिकित्सक को जानकारी देवे ताकी प्रसव में कठिनाई होने पर उपस्थित हो सके।
- बियाने के 2 घंटे के अंदर मां का दूध (खीस) जरुर पिलायें, लगातार एक सप्ताह तक बच्चे को खीस सुबह-शाम पिलाये।
- जब मेमना 2-3 माह की हो जाये तो मां का दूध पिलाना रोक दे जिससे पुनः बकरी में गर्मी आकर गर्भधारण की सम्भावना बढ़ जाये।
- 144-152 दिन का बकरियों में गर्भधारण होती है इस बीच में अतिरिक्त पोषण दिया जाये साथ ही गाभिन बकरियों को एक से दूसरे जगह घुमाये। बकरियों को तेज न दौड़ाये किसी भी प्रकार का मारपीट न करे।
- बैठने के जगह को साफ-सुथरा रखे।

नवजात मेमनों की देखभाल

- बियाने के बाद मेमनों का तुरंत ही साफ कपड़े से उनकी नाक, मुंह, व खुर पैर की सफाई करे।
- मेमनों के निकली हुई नाल को पेट से ठीक नीचे एक इंच नई ब्लेड से काट दे और धागे बांधकर टिंचर लगाये।
- मेमनों को उनकी मां के पास रखे जिससे चाट-चाटकर गर्मी दे सके।
- मेमनों को दूध पिलाने से पहले बकरी की थन को पोटाश पानी से धो दे।
- मेमनों की मां का पहला दूध (खीस) पिलाएं, खीस में नवजात को बीमारियों से लड़ने की क्षमता बढ़ाती है।
- मेमना 15 दिन का हो जाये तब हल्की मुलायमदार हरा चारा व दाना की छोटे-छोटे टुकड़े कूटकर खिलाना शुरू करे।

- मेमनों को 3 दिन बाद टीकाकरण कृमिनाशक लगवाये।
- नवजात मेमनों को पशु चिकित्सक के निगरानी में रखे।

बकरियों में रोग

बकरियों में लगने वाले प्रमुख रोग निम्न प्रकार से है

मुंहपका-खुरपका रोग

- रोग लक्षण मुख्य रूप से मुंह और पैर की खूर पर दिखाई पड़ती है।
- मुंह के अंदर छाले दिखाई देती है जिसके वजह से बकरियां खाना-पीना बंद कर देतीहै।
- पैर की खुरों पर छाले पड़ जाती है जिसके कारण से लंगड़ाकर चलती है।

उपचार

- बकरियों के मुंह और खुंर को लाल दवा/ डेटॉल/ फिनाइल से दिन में दो बार धुलायें।
- मुंह, पैर को लाल दवाओं से धुलाने के बाद लोरेक्सन/चर्मिल पेस्ट का लगाये।
- एंटीबायोटिक व बुखार के लिए टीका लगवाये(मेलोनेक्स/वेटालिज्म 5मिली.)।

निमोनिया रोग

लक्षण- बकरियों का यह प्रमुख रोग है, बकरिया ठण्ड से कांपने लगती है, नाक से तरल पदार्थ का बहाव होने लगती है साथ ही श्वास लेने मांदिक्कत होती है। बीच-बीच में खांसी भी आते रहते है।

उपचार

- बकरियों को धूप दिखाएं
- 3-5 मिली एंटीबायोटिक दे।
- खांसी के लिए केपेलोन पाउडर 6 से 12 ग्राम को दे।

छै रोग

बकरियों को थोड़ी-थोड़ी देर में दस्त/ मल का होना।

उपचार

- नेबेलोन पाउडर 15-20 ग्राम लगातार तीन दिन तक दें।
- वैक्सिन या नेबेलोन पाउडर दें।

थनेलारोग

थन सूजकर फूल जाती है। कभी-कभी खून भी बहने लगती है।

उपचार

- पेंदेस्तरिन ट्यूब नामक इंजेक शन को थन में डाल दे। लगातार 3-5 दिनों तक उपचार करें।

परजीवियों का आक्रमण

बकरीयों के शरीर पर छोटे-छोटे कृमि, कीट उत्पन्न हो जाते है जो खून चुसने का कार्य करती जिसके कारण से कमजोर हो जाती है।

उपचार

- बी.एच.सी. और मैलाथियान का छिड़काव करें।
- आईवर मैक्टिीन का इंजेक्शन चमड़ी में दे। आलबेन्डाजोल, लेवामेर जेल को लगाये।

आपरा लक्षण

- आपरारोग में बकरियों की पेट फूल जाती है, दबाने पर ढोले जैसे आवाज आती है।
- पेट दर्द के कारण से पैर बार-बार पटकती है।
- सांस लेने में तकलीफ होती है।

उपचार

- रोगग्रसित बकरियों को अलग रखे।
- खाना-पीना देना बंद कर दे।
- 1 चम्मच खाने का सोड़ा/टिम्पोल पाउडर 15-20 ग्राम को पिलाये।
- 1 चम्मच तारपीन तेल/150-200 मिली मीठी तेल का मिक्स कर पिलाये।

एंथेक्स रोग-बैसिलस एन्थ्रेसिस नामक रोग जनक जीवाणु द्वारा होती है। ●